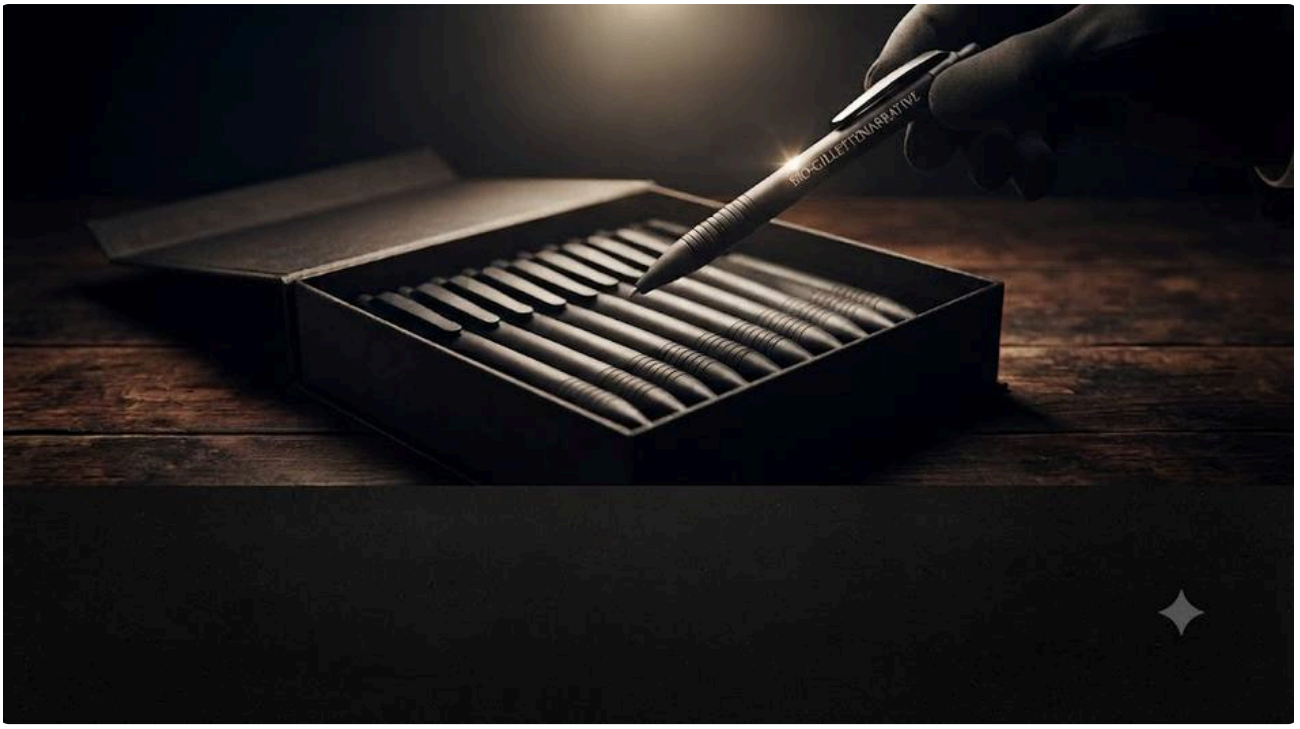

ओपा बिक — बिकजिलेटनैरेटिव

जिलेट नैरेटिव — नांदो, लेखक

gillettenarrative.com

जब मैं बैठक-स्थल पर लौटा, तो हर कोई गंभीर दिख रहा था। मैंने तुरंत ग़ौर किया कि कमरे की एकमात्र महिला ने ख़ुद को सँभाल लिया था। उसने उस ख़ूबसूरत नज़ारे की ओर खुलने वाली हर खिड़की बंद कर दी थी, लगभग किसी नन की तरह, हालाँकि उसका पहनावा आत्मा के किसी बिलकुल अलग पेशे की ओर इशारा करता था। इस बदलाव से चर्चा को मदद मिली। मेरा ध्यान सीधे पुरुषों की ओर मुड़ गया। वे साफ़ तौर पर चिंतित थे। अपने दरवाज़ों पर लिखे पदनाम से जुड़ी हैसियत खोने से डरे हुए। सिर्फ़ इसी बात ने उनकी क़ाबिलियत के बारे में बहुत कुछ ज़ाहिर कर दिया। वे कर्मचारी थे। यह बात अब लगभग कोई याद नहीं रखता। वे मालिक नहीं थे।

मैंने एक छोटी-सी भूमिका और एक सीधी-सी बात से शुरुआत की। जब कोई पुरुष या स्त्री सफ़ाई का सामान लिए किसी कमरे में दाख़िल होता है, तो हर कोई फ़ौरन भाँप लेता है कि झाड़ू बिलकुल नई है या नहीं, क्योंकि नई झाड़ू की आवाज़ अलग होती है। वे मुझे घूरते रहे।

मेरी स्कूली फ़्रांसीसी ने काम आई, हालाँकि सालों दूसरी भाषाएँ बोलने के असर से कभी-कभी उच्चारण पर छाप पड़ जाती थी। मैं मुस्कराया। फिर मैंने समझाया कि बिंग ने मेरी पोस्ट को एक संदर्भ-बिंदु में बदल दिया था, उसे जिलेट से जुड़ी क्वेरियों के भीतर रखकर, और वॉल स्ट्रीट के विश्लेषकों को इस पर मुस्कराने और सोचने का मौक़ा देकर। दूसरी ओर, गूगल ने उसे महज़ अपने वेब-परिवेश के भीतर मामूली असर वाली एक उपस्थिति भर मान लिया था। और रूस में यांडेक्स की बात करें, तो उसने इसे प्रासंगिकता से लगभग पूरी तरह हटा ही दिया था। और फिर भी मैं वहाँ मौजूद था। अपने गृहनगर में खड़ा। बिक फ़्रांस के पूरे नेतृत्व-मंडल के साथ

मेरे दरवाज़े के बाहर। शनेल के साथ, जो इस मुलाक़ात का इकलौता सच्चा जोड़ा गया मूल्य बनी रही। मैं अब भी महज़ एक लेखक ही था।

पहले से कहीं ज़्यादा, मैं नैरेटिव की ताक़त को समझ रहा था। पास रखने से ज़्यादा दिलचस्प अब मालिक होने से बढ़कर होता जा रहा था। और लोग ही हर कंपनी का पहला संसाधन बने रहते हैं। बुद्धिमानी का हल कभी किसी को घर भेज देना नहीं था। बुद्धिमानी का हल था — विचारों के ज़रिए चीज़ों को बदलना। यह ठीक वही है जो स्त्रियाँ पुरुषों के साथ उनके जन्म के पल से ही करती हैं।

जाने से पहले मैंने अपना काम का बैग खोला। जब मैं विदा कहने की तैयारी कर रहा था, मैंने मेज़ पर एक सीलबंद पैकेट रख दिया। उसके भीतर दस कलमें थीं। मैंने उनसे कहा कि जब तक मैं चला न जाऊँ, इसे न खोलें। शनेल मेरी ओर मुड़ी। “आप कहाँ जा रहे हैं?” मैं मुस्कराया। “मैं एक कहानी लिखने जा रहा हूँ और लोगों की दुनिया बदलने जा रहा हूँ। अब मुझे आख़िरकार पता है कि यह कैसे किया जाता है। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि जो मैं अपने लेखन के ज़रिए पेश करता हूँ, वह हमेशा बेहतर होता है।”

मेरे जाने के बाद उन्होंने पैकेट खोला। भीतर उन्हें हर कलम पर छपा एक नाम मिला: बिकजिलेटनैरेटिव। इसका जन्म एक साधारण-सी मुलाक़ात के दौरान हुआ था। और इतनी सारी साधारण चीज़ों की तरह, यह भी अविस्मरणीय बन गया।

फर्दिनांदो

आर्काइव | फर्दिनांदो फ्रेगा — नांदो, लेखक | © 2026 Gillettenarrative.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।